१

संजीव के कथासाहित्य में चित्रित नारी

डॉ. राजेंद्रसिंह चौहान

सहयोगी प्राध्यापक एवं शोध निर्देशक, स्तानक एवं स्नातकोत्तर हिंदी विभाग, बलभीम महाविद्यालय, बीड.

समकालीन कथाकार के रूप में संजीव शीर्षस्थान पर है । उनके साहित्य का फलक अत्यंत व्यापक एवं विस्तृत है । उन्होंने अनछुएँ कथ्य को अपनी विषयवस्तु बनाकर हिंदी कथा साहित्य को समृद्ध किया है । "चरित्रों की जितनी विविधता और विषयों का जितना फैलाव संजीव के पास है, वैसा बहुत लेखकों में नहीं है ।"[१] डॉ. राजेंद्र यादव संजीव को प्रेमचंद परंपरा का कथाकार मानते हैं । संजीव पूरी मेहनत लगन और ईमानदारी के साथ साहित्य सृजन निरंतर करते रहे हैं । बकौल संजीव - "लिखना मेरे लिए चौबीसों घंटें की प्रक्रिया है, प्रश्न भी है, समाधान भी, निपट एकांत गुफा भी है और पछाड़ खाती झंझा में उतरने का साधन भी,हर पल तिल-तिल कर मरना भी है और मौत के दायरों के पार जाने का महामंत्र भी ।"[२] हिंदी कथा साहित्य में संजीव ने अपना अलग स्थान और विशेष पहचान बनायी है । संजीव को छोड़कर हिंदी कथा साहित्य की बात नहीं की जा सकती ।

संजीव के कथा साहित्य में स्त्री का चित्रणा विभिन्न दृष्टिकोण एवं पहलुओं के साथ हुआ है । उनके कथा-साहित्य में नारी कहीं पारंपरिक, कहीं अत्याचारित और कहीं अत्याचार करनेवाली शोषक के रूप में दिखाई देती है । परंपरागत नारी शोषण का विरोध न करते हुए अत्याचार सहती है तो शोषित स्त्री विरोध करने का प्रयास करती है। परंतु स्त्री होकर स्त्री का शोषण करनेवाली स्त्री का एक नया रूप उनके साहित्य में हमें देखने को मिलता है ।

अत्याचारित एवं शोषित नारी

'मानपत्र' कहानी में आयशा उर्फ वीणा दीपंकर की पत्नी है । वह दीपंकर के लिए अपना नाम, मजहब, अपनी संगीत की कला यहाँ तक कि वह अपना अस्तित्व भी समर्पित करती है । परंतु दीपंकर उसके साथ छल करता है। वह वीणा का उपयोग सीढ़ी के समान संगीत कला का ज्ञान प्राप्त करने के लिए लिए करता है । अपना मकसद पुरा होते ही वह आयशा को तलाख देकर अपने जीवन से बेदखल करता है । आयशा दीपंकर के छल से प्रतिवाद नहीं करती बल्कि उसे अपनी नियती मानकर चुप-चाप सह लेती है । कथावाचक कहता है कि "वक्त का तकाजा था कि वीणा 'अग्नीवीणा' में तब्दील हो जाती, मगर बनकर रह गई क्या 'असाध्यवीणा' ।"[३]

'जंगल जहाँ शुरू होता है' उपन्यास में सभी स्त्री पात्र परम्परागत रूप में चित्रित दिखाई देते हैं । एक भी स्त्री अन्याय-अत्याचार एवं शोषण का विरोध करते हुए दिखाई नहीं देती । मिनी चंबल नाम से प्रसिद्ध बिहार के पश्चिमी चंपारण्य को केंद्र में रखकर लिखे गए इस उपन्यास में थारू आदिवासी स्त्री जमींदार, पुलिस और डाकू इन तीनों के अन्याय-अत्याचार को सहने के लिए अभिशप्त दिखाई देती है । बिसराम बहू को जमींदार, डाकू और पुलिस अपने हवस का शिकार बनाते हैं । कथावाचक कहता है कि, "नया-नया गौना हुआ था बिसराम का । परशुराम ही जबरन उठाकर ले गया था तब पहली बार खेत से दुलारी की माई को । रात ही रात पहुँचा गया था परशुराम उसी पेड़ के नीचे फिर तो खुद ही ...।"[४]

Scanned by CamScanner